بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

لِاِیْلٰفِ قُرَیْشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَ الصَّیْفِ ۚ﴿۲﴾ فَلْیَعْبُدُوْا رَبَّ

इस लिये कि क़ुरैश को मैल दिलाया उन के जाड़े और गरमी दोनों के कूच में मैल दिलाया (रग़बत दिलाई)[2] तो उन्हें चाहिये इस घर

هٰذَا الْبَیْتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْۤ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۵ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿۴﴾ ع

के[3] रब की बन्दगी करें जिस ने उन्हें भूक में[4] खाना दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा[5]

اٰیاتها ۷ ۱۰۷ سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّیَّةٌ ۱۷ رکوعها ۱

सूरए माऊ़न मक्किय्या है, इस में सात आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یُكَذِّبُ بِالدِّیْنِ ؕ﴿۱﴾ فَذٰلِكَ الَّذِیْ یَدُعُّ الْیَتِیْمَ ۙ﴿۲﴾

भला देखो तो जो दीन को झुटलाता है[2] फिर वोह वोह है जो यतीम को धक्के देता है[3]

وَ لَا یَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ؕ﴿۳﴾ فَوَیْلٌ لِّلْمُصَلِّیْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ

और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता[4] तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से

1 : "सूरतुल क़ुरैश" बक़ौले असह़्ह़ मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, चार आयतें, सतरह कलिमे, तिहत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी अल्लाह तआ़ला की ने'मतें बे शुमार हैं, उन में से एक ने'मते ज़ाहिरा येह है कि उस ने क़ुरैश को हर साल में दो सफ़रों की त़रफ़ रग़बत दिलाई, उन की मह़ब्बत उन में डाली, जाड़े के मौसिम में यमन का सफ़र और गरमी के मौसिम में शाम का कि क़ुरैश तिजारत के लिये इन मौसिमों में येह सफ़र करते थे और हर जगह के लोग इन्हें अहले ह़रम कहते थे और इन की इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत करते थे। येह अम्न के साथ तिजारतें करते और फ़ाएदे उठाते और मक्कए मुकर्रमा में इक़ामत करने के लिये सरमाया बहम पहुंचाते, जहां न खेती है न और अस्बाबे मआ़श, अल्लाह तआ़ला की येह ने'मत ज़ाहिर है और इस से फ़ाएदा उठाते हैं। **3 :** या'नी का'बए शरीफ़ा के **4 :** जिस में इन सफ़रों से पहले अपने वत़न में खेती न होने के बाइ़स मुब्तला थे, इन सफ़रों के ज़रीए से **5 :** ब सबब ह़रम शरीफ़ के और ब सबब अहले मक्का होने के कि कोई उन से तअ़र्रुज़ नहीं करता बा वुजूदे कि अत़राफ़ो ह़वाली (आस पास के अ़लाक़ों) में क़त्लो ग़ारत होते रहते हैं, क़ाफ़िले लुटते हैं, मुसाफ़िर मारे जाते हैं या येह मा'ना हैं कि उन्हें जुज़ाम से अम्न दी कि उन के शह्र में उन्हें कभी जुज़ाम न होगा या येह मुराद कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की बरकत से उन्हें ख़ौफ़े अ़ज़ीम से अमान अ़त़ा फ़रमाई। **1 :** "सूरतुल माऊ़न" मक्किय्या है और येह भी कहा गया है कि निस्फ़ मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई, आ़स बिन वाइल के बारे में, और निस्फ़ मदीनए त़य्यिबा में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में। इस में एक रुकूअ़, सात आयतें, पच्चीस कलिमे, एक सो पच्चीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी ह़िसाब व जज़ा का इन्कार करता है बा वुजूद दलाइल वाज़ेह़ होने के। **शाने नुज़ूल :** येह आयतें आ़स बिन वाइल सहमी या वलीद बिन मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुईं। **3 :** और उस पर शिद्दत व सख़्ती करता है और उस का ह़क़ नहीं देता। **4 :** या'नी न ख़ुद देता है न दूसरे से दिलाता है, इन्तिहा दरजे का बख़ील है।

www.dawateislami.net

صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِیْنَ هُمْ یُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾ وَ یَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ﴿۷﴾

भूले बैठे हैं[5] वोह जो दिखावा करते हैं[6] और बरत्ने की चीज़[7] मांगे नहीं देते[8]

ایاتہا ۳ | ۱۰۸ سُوْرَۃُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ ۱۵ | رکوعہا ۱

सूरए कौसर मक्किय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْكَوْثَرَ ؕ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَ انْحَرْ ؕ﴿۲﴾ اِنَّ شَانِئَكَ

ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं[2] तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो[3] और क़ुरबानी करो[4] बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है

هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿۳﴾

वोही हर ख़ैर से मह़रूम है[5]

ایاتہا ۶ | ۱۰۹ سُوْرَۃُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ ۱۸ | رکوعہا ۱

सूरए काफ़िरून मक्किय्या है, इस में छ[6] आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

---

5 : मुराद इस से मुनाफ़िक़ीन हैं जो तन्हाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्यूं कि इस के मो'तक़िद नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आप को नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिये उठ बैठ लेते हैं और ह़क़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। **6 :** इबादतों में। आगे उन के बुख़्ल का बयान फ़रमाया जाता है **7 :** मिस्ल सूई व हांडी व पियाले के **8 मस्अला :** उ़लमा ने फ़रमाया कि मुस्तह़ब है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी ह़ाजत से ज़ियादा रखे जिन की हमसायों को ह़ाजत होती है और उन्हें आ़रिय्यतन दिया करे। **1 :** "सूरतुल कौसर" जुम्हूर के नज़्दीक मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, दस कलिमे, बियालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** और फ़ज़ाइले कसीरा इनायत कर के तमाम ख़ल्क़ पर अफ़्ज़ल किया। ह़ुस्ने ज़ाहिर भी दिया ह़ुस्ने बातिन भी, नसबे आ़ली भी, नुबुव्वत भी, किताब भी, ह़िक्मत भी, इ़ल्म भी, शफ़ाअ़त भी, ह़ौज़े कौसर भी, मक़ामे मह़मूद भी, कस्रते उम्मत भी, आ'दाए दीन पर ग़लबा भी, कस्रते फ़ुतूह़ भी और बे शुमार ने'मतें और फ़ज़ीलतें जिन की निहायत नहीं। **3 :** जिस ने तुम्हें इ़ज़्ज़तो शराफ़त दी **4 :** उस के लिये उस के नाम पर, ब ख़िलाफ़ बुत परस्तों के जो बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि नमाज़ से नमाज़े ई़द मुराद है। **5 :** न आप। क्यूं कि आप का सिल्सिला क़ियामत तक जारी रहेगा, आप की औलाद में भी कसरत होगी और आप के मुत्तबिई़न से दुन्या भर जाएगी, आप का ज़िक्र मिम्बरों पर बुलन्द होगा, क़ियामत तक पैदा होने वाले आ़लिम और वाइ़ज़ अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के साथ आप का ज़िक्र करते रहेंगे, बे नामो निशान और हर भलाई से मह़रूम तो आप के दुश्मन हैं। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रज़न्द ह़ज़रते क़ासिम का विसाल हुवा तो कुफ़्फ़ार ने आप को "अब्तर" या'नी मुन्क़तउ़न्नस्ल कहा और येह कहा कि अब इन की नस्ल नहीं रही, इन के बा'द अब इन का ज़िक्र भी न रहेगा, येह सब चरचा ख़त्म हो जाएगा, इस पर सूरए करीमा नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब की और उन का बालिग़ रद फ़रमाया। **1 :** "सूरतुल काफ़िरून" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, छ[6] आयतें, छब्बीस कलिमे, चोरानवे ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** क़ुरैश की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा कि आप हमारे दीन का इत्तिबाअ़ कीजिये हम आप के दीन की इत्तिबाअ़ करेंगे, एक साल आप हमारे मा'बूदों की इबादत करें एक साल हम आप के मा'बूद की इबादत करेंगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net